Total No. of Printed Pages—6

6 SEM TDC HND M 4 (Op)

2015

(May)

HINDI

(Major)

Course : 604

(Optional)

Full Marks : 80
Pass Marks : 32

Time : 3 hours

The figures in the margin indicate full marks for the questions

क : तुलसी साहित्य (विशेष पत्र)

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 1×8=8

(क) 'विनय-पत्रिका' के पदों की भाषा क्या है?

(ख) 'रामचरितमानस' खण्डकाव्य है या महाकाव्य?

(ग) तुलसीदास किस काल के कवि थे?

(घ) 'रामचरितमानस' में कुल कितने काण्ड हैं?

(ङ) "श्री गुरु चरन सरोज रज... ... जो दायकु फल चारि"—दोहा 'रामचरितमानस' के किस काण्ड का है?

(च) गोस्वामी तुलसीदास किसके शिष्य थे?

(छ) 'रामचरितमानस' का आधार ग्रंथ क्या है?

(ज) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार गोस्वामी तुलसीदास ने कुल कितने ग्रंथों की रचना की थी?

2. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 8×2=16

(क) "सबके उर अभिलाषु अस कहहिं मनाइ महेसु।
आप अछत जुबराज पद रामहि देउ नरेसु॥
यह बिचारु उर आनि नृप सुदिनु सुअवसरु पाइ।
प्रेम पुलकि तन मुदित मन गुरुहि सुनायउ जाइ॥"

अथवा

"भूप मनोरथ सुभग बनु सुख सुविहंग समाजु।
मिलिनि जिमि छाड़न चहति बचनु भयंकरु बाजु॥
कवनें अवसर का भयउ गयउँ नारि बिस्वास।
जोग सिद्धि फल समय जिमि जतिहि अबिद्या नास॥"

(ख) "मेरो मन हरिजू! हठ न तजै।
निसिदिन नाथ देउँ सिख बहु बिधि, करत सुभाव निजै॥
ज्यों जुवती अनुभवति प्रसव अति दारुन दुख उपजै।
ह्वै अनुकूल बिसारी सूल सठ पुनि खल पतिहिं भजै॥
लोलुप भ्रम गृहपसु ज्यौं जहँ तहँ सिर पदमान बजै।
तदपि अधम बिचरत तेहि मारग कबहुँ न मुढ़ लजै॥"

अथवा

"माधव! मो समान जग माहीं।
सब बिधि हीन, मलिन, दीन अति, लीन-बिषय कोउ नाहीं॥
तुम सब हेतु रहित कृपालु आरत-हित ईस न त्यागी।
मैं दुख सोक बिकल कृपालु! केहि कारन दया न लागी॥
नाहिन कछु औगुन तुम्हार, अपराध मोर मैं माना।
ग्यान-भवन तनु दियेहु नाथ, सोक पाय न मैं प्रभु जाना।"

(Continued

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 4×4=16

(क) गोस्वामी तुलसीदास ने 'विनय-पत्रिका' की रचना किन परिस्थितियों में और क्यों की?

(ख) "तुलसीदास की रचनाओं में भाव-वैविध्य है।" स्पष्ट कीजिए।

(ग) तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' में किन-किन काव्य-शैलियों का प्रयोग किया है?

(घ) तुलसीदास का पालन-पोषण किसने और कैसे किया?

4. निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 10×4=40

(क) वर्तमान युग में गोस्वामी तुलसीदास की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए।

(ख) "भारतवर्ष का लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय करने का अपार धैर्य लेकर आया हो।"—के आधार पर गोस्वामी तुलसीदास के लोकनायकत्व की मीमांसा कीजिए।

(ग) 'रामचरितमानस' की रस-योजना का परिचय दीजिए।

(घ) 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड की संक्षिप्त कथा का परिचय दीजिए।

(ङ) पठित ग्रंथों के आधार पर गोस्वामी तुलसीदास की भक्ति-भावना का परिचय दीजिए।

(च) "'विनय-पत्रिका' में कोई कथा नहीं है। एक भक्त की प्रार्थना है।"—के आधार पर 'विनय-पत्रिका' की समीक्षा कीजिए।

(Turn Over)

ख : सूर साहित्य (विशेष पत्र)

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : $1 \times 8 = 8$

(क) सूर जन्मांध थे या बाद में नेत्रविहीन हुए थे?

(ख) सूरदास कहाँ रहते थे?

(ग) भक्तमाल के अनुसार सूरदास जी का यज्ञोपवीत किस आयु में हुआ था?

(घ) द्वादश स्कन्धात्मक 'सूरसागर' की रचना किसके आधार पर हुई है?

(ङ) 'साहित्य लहरी' में कितने पद हैं?

(च) सूर के पदों में किस तरह के काव्य की विशेषता पायी जाती है?

(छ) सूर की मनोवृत्ति किन रसों के क्षेत्र में रमी है?

(ज) सूरदास के स्वामी कैसे हैं?

2. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : $8 \times 2 = 16$

(क) बूझत स्याम कौन तू गोरी।
कहाँ रहति, काकी है बेटी, देखी नाहिं कबहू ब्रज-खोरी॥
काहे कौ हम ब्रज तन आवति, खेलति रहती आपनी पौरी॥
सुनत रहति स्रवननि नंद-ढोटा करत रहत माखन दधि चोरी॥
तुम्हरो कहा चोरि हम लैहैं, खेलन चलौ संग मिली जोरी॥
सूरदास प्रभु रसिक सिरोमनि बातनि भुरइ राधिका भोरी॥

(Continued

28

अथवा

चरण-कमल बंदौं हरि-राई।
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अंधे को सब कछु दरसाई॥
बहिरौ सुनै, मूक पुनि बोले, रंक चलै सिर छत्र धराई॥
सूरदास स्वामी करुणामय, बार-बार बंदौं तिहि पाई॥

(ख) करम-जोग पुनि ज्ञान उपासन सब ही भ्रम भरमायौ।
श्री बल्लभ गुरु तत्त्व सुनायौ, लीला-भेद बतायौ॥
ता दिन तैं हरि लीला गाई, एक लक्ष पद बंद।
ताकौ सार 'सूर' सारावली, गावत अति आनन्द॥

अथवा

मुनि पुनि रसन के रस लेख।
दसन गौरीनंद को लिखि सुंबल सम्वत् पेख॥
नंद-नंदन मास, छै ते हीन तृतीया बार।
नंद-नंदन जनम ते हैं बान सुख आगार॥
तृतीय ऋक्ष, सुकर्म जोग विचारि सूर नवीन।
नंद-नंदन दास हित साहित्य-लहरी कीन॥

अथवा

गोपी सुनौं हरि संदेश।
कह्या पूरन ब्रह्म ध्याऔं, त्रिगुण मिथ्या भेस।
हौं कहौं सो सीख मानौं, त्रिगुण माया नांखि।
पंच त्रैगुण सकल देही, जगत देखौ आंखि।
ज्ञान बिन तब मुक्ति नहीं, विसय बिस संसार।
रूप रहै न नाम जुग जुग, बरन अबरन सार।
मात-पिता न बंधु नारी, जगत् मिथ्या लाइ।
सूर दुःख सुख नांहिं जाकै, भजौ ताकौ जाइ।

(Turn Over)

3. निम्नलिखित पर टिप्पणियाँ लिखिए : 4×4=1

(क) सूरदास की बाललीला

(ख) सूरदास की राधा

(ग) पुष्टिमार्ग

(घ) भ्रमरगीत : एक उपालंभ काव्य

4. निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 10×4=4

(क) अष्टछाप क्या है? कृष्णकाव्य के विकास में अष्टछाप के कवियों के योगदान का मूल्यांकन कीजिए।

(ख) सूरकाव्य में जो सहृदयता, भावुकता एवं वाग्विदग्धता मिलती है, सोदाहरण उसका परिचय दीजिए।

(ग) भ्रमरगीत परम्परा में सूर का स्थान निरूपित कीजिए।

(घ) सूर की 'राधा' और 'यशोदा' में कौन श्रेष्ठतर निर्माण है? उदाहरण सहित लिखिए।

(ङ) 'साहित्य लहरी' के रचनाकाल के साथ इसकी प्रामाणिकता पर विचार कीजिए।

★★★